International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 1, January- 2021
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

समर्थ शिक्षा के लिए शिक्षक एवं अभिभावकों की भूमिका

Priyanka Kumari Sharma

Research Scholar,School of Education , Nirwan University, Jaipur

साराश :

व्यावहारिक रूप से देखे तो शिक्षा सूचनाओं का संकलन बनती जा रही है विधालय उदास है और शिक्षक अपने कुंद शिक्षण से विधार्थीयो को प्रखर बनाने के प्रयास के प्रभाव में लगे है अभिभावक तथस्ट है तो उनके बालक निस्तेज इस स्थिति में शिक्षा व शिक्षण अव अप्रांसगिक सी हो चली है। जरूरत है इसमें सजीवता लाने को और जीवंत बनाने की।

वर्तमान युग में शिक्षक का स्वरूप पूर्णतः परिवर्तित हो गया है। आज शिक्षक अपने गौरव को पूर्णतः खो चुका है। धन की लिप्सा तथा अकर्मण्यता ने शिक्षक के स्वरूप परिवर्तित किया है वह ज्ञान का भण्डार न होकर स्वार्थ, लोभ, लिप्सा का भण्डार हो चुका है।

बीज शब्द :

आत्मानुभूति, अनुकरण, सर्वांगीण, समर्थ शिक्षा, आध्यात्मिक, तर्कशीलता, विवेकशीलता, आत्मचिंतन, समरसता

प्रस्तावना :

शिक्षा एक ऐसा पारस है जिसमें मनुष्य व्यक्तित्व सोने की तरह चमक जाता है। शिक्षा मानव समाज में मेरूदण्ड है। शिक्षा हिमालय पर्वत से बहकर आने वाले वायु के शीतल झोके की तरह है जो इस विज्ञान के युग मे मानव जीवन में सुख, समृद्धि, सम्पत्ति और संतोष लाती है। यह हर युग में मानव के मैल को धोकर उज्जवलता प्रदान करती है। शिक्षा ही व्यक्ति में आत्मविश्वास आत्मचिंतन को पैदा करती है एवं उसमे विवेकशीलता, तर्कशीलता निर्णयशक्ति का विकास करती है अतः समाज के प्रत्येक स्तर व व्यक्ति के लिए शिक्षा हासिल करने को जरूरत विकासशील देश व समाज हेतु आवश्यक मानी गई है।

विवेकानंद के अनुसार ''हमें उस शिक्षा को आवश्यकता है जिसके द्वारा चरित्र का निर्माण होता है, मस्तिष्क की शक्ति बढती है बुद्धि का विकास होता है और मनुष्य अपने पैरो पर खडा हो सकता है।'' शिक्षा की आज प्रमुख मॉग सुआचरण है। आचरण चाहे अभिभावक का हो चाहे अध्यापक का बच्चो के लिए सफल एवं सशक्त आदर्श यही है। जिसका आचरण श्रेष्ठ है।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 1, January- 2021
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

बालक की शिक्षा घर आंगन से शुरू होती है और वह गहराई से अपने बड़ो के आचरण को देखता है तथा उनका अनुकरण करता है। इसके पश्चात वह विधालय आता है और अपने शिक्षक के सानिध्य में पढना–लिखना सीखता है। अपनी पढाई–लिखाई के साथ साथ यह अध्यापन करवाने वाले गुरूजनो के आचरण को भी परखता है। उन्हे आदर्श मानकर अनुकरण करता रहता है इसी कारण हमारे विचारको ने शिक्षको से अपेक्षा की है कि बालको के समक्ष अनुशासित एवं आदर्श आचरण प्रस्तुत करे।

रविन्द्र नाथ टैगोर का इस संबंध में कहना था ''बालक को शिक्षा शिक्षक ही दे सकता है उसे उनके सम्मुख आदर्श आचरण का उदाहरण बनना चाहिए।''

महात्मा गॉधी ने भी आत्मानुभूति को प्रश्रय दिया और इसी आधार पर अपने शैक्षिक विचारो को व्यावाहारिक रूप दिया। इन गुणों का वाहक ही जीवन के सम्मुख खडी चुनौतियो गुणो से युक्त है तो निश्चित रूप से भी हमारे विधार्थियों में इन गुणो का अंकुरण होगा इन गुणो का वाहक ही जीवन के सम्मुख खडी चुनौतियों और विषय परिस्थितियों का मानवीयता के आधार पर मुकाबला करता है। मनुष्य का यह संघर्ष जीवनारम्भ से लेकर जीवान्त तक निरन्तर चलता रहता है। अपने इसी दृष्टिकोण को विश्वास पर उन्होने अपनी अवधारणा प्रकट की थी कि साक्षरता न तो शिक्षा का अंत है न ही आंरम्भ शिक्षा तो जीवन भर चलती रहती है और हमें हर परिस्थिति में आत्मानुशासन सिखाती रहती है उनका मानना है सुआचरण से आत्मानुशासन सशक्त होता है नैतिकता जागती है और समाज सेवा का भाव मजबूत होता है।

समर्थ शिक्षा के लिए शिक्षक की भूमिका

भारत वर्ष की प्राचीनता, दार्शनिकता तथा आध्यात्मिकता को अखिल विश्व के समृद्ध राष्ट्र भी निसंकोच होकर स्वीकार करते है माता–पिता के पश्चात गुरू की मान्यता को वेद, उपनिषद तथा परवर्ती साहित्य में एक मत से स्वीकार किया गया है।

मानव जीवन का कोई क्षेत्र हो उसे स्वामित्व प्राप्त करने के लिए किसी ऐसे व्यक्ति की खोज करनी पडती है जो इस क्षेत्र में पूर्ण ज्ञान रखता हो जिस प्रकार शिक्षक के बिना अन्धकार दूर नही होता नाविक के बिना नैया नदी को पार नहीं कर पाती इसी प्रकार शिक्षक के बिना व्यक्ति को ज्ञान को प्रकाश नहीं मिल पाता

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 1, January- 2021
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

शिक्षक एक आलौकिक शक्ति एवं दिव्य ज्योति से परिपूर्ण होता है। जिसका वरद्हस्त क्षणिक सम्पर्क तथा अमृतमयी वाणी सुख, शांति और संतोष प्रदान करती है। गुरू का व्यवहार संजीवनी बूटी के समान है जो तीखी तथा कडवी तो होती है परन्तु रोग को दूर करने में सहायक होती है। इसी प्रकार शिक्षक का व्यवहार भी साधक के भव रोगो का नाश करता है। **रामचरितमानस में परिलिक्षित है।**

''बदंऊ गुरू पदम परागा। सुरूचि सुबास सरस अनुरागा।
अमिअ मुरिमय चूरन चारू। समन सकल भवरज परिवारू।।''

फ्रोबेल के शब्दो में – ''विधालय रूपी बाग में अध्यापक रूपी माली विधार्थी रूपी पौधो के विकास में सहयोग देते है। यह सहयोग भी तभी दे सकते है जब उन्हे बच्चो की प्रकृति और उनके विकास को प्रक्रिया का स्पष्ट ज्ञान हो अतः अध्यापक में छात्रो को समझने और उनका उचित ढंग से विकास कर सकने को शक्ति भी होनी चाहिए।''

हुमायूँ कबीर ने कहा है कि ''शिक्षक एक राष्ट का निर्माता होता है।''

यही तथ्य **कोठारी आयोग** ने अपने प्रथम वाक्य में कहा है कि भारत के भाग्य का निर्माण कक्षा में हो रहा है।

उपरोक्त परिभाषाओं से स्पष्ट होता है कि मूल्यों के विकास में और राष्ट्र के निमाण में शिक्षक की महत्वपूर्ण भूमिका है बदलते हुए परिवेश में शिक्षक की अनेक भूमिकाओं का उल्लेख किया जाता है परन्तु शिक्षक को समाज के लिए आदर्श माना जाता है।

समर्थ शिक्षा और शिक्षक

- शिक्षक ही वह व्यक्ति है जो बच्चे के लिए आदर्श होता है तथा इसके ईद गिर्द सम्पूर्ण शिक्षण प्रक्रिया घूमती है। शिक्षक का लक्ष्य होता है विधार्थी को समर्थ, सुयोग्य एवं संतुलित व्यक्ति बनाना। शिक्षा में धातु है 'शक' शक अतार्थ सकना, समर्थ होना अतार्थ शिक्षा प्राप्ति के पश्चात विधार्थी आत्मनिर्भर बनकर जीवन में सबके साथ समरसता के साथ सामजस्य पूर्वक चल सके समरसता के साथ विधार्थी तभी चल सकता है जब उसके मानवीय मूल्य

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 1, January- 2021
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

प्रचुर मात्रा में ही मानवीय मूल्यो, दया, सहयोग, सदभाव, सत्य, त्याग दूसरो की संस्कृति के प्रति आदर देशप्रेम आदि शिक्षक में होगें तो विधार्थी शिक्षक के आचरण से ही उनका अनुकरण करेंगें।

- समर्थ शिक्षा के लिए शिक्षक को अपना व्यक्तिव इस प्रकार बनाना है कि स्वयं विधार्थी को अपनी और आकृष्ट कर ले तभी वह अपने गुरू पद की गरिमा को सार्थक कर सकता है। वह अपने महत्व एवं गरिमा के कारण शिष्य को आत्कृष्ट करता है। साथ ही उसके अज्ञान के अंधेरे को ठीक उसी प्रकार दुर करे जैसे सूरज।

अज्ञानतिमिरांधस्य ज्ञानांजनशलाकया।
चक्षुरून्मीलितं येन तस्मै श्री गुरवेनमः।।

- समर्थ शिक्षा हेतु शिक्षक को विधार्थी के सम्पूर्ण व्यक्तित्व का निर्माण करना है। अतः उसे शिक्षक के रूप में स्वयं में आचार्य के साथ साथ माता–पिता के भी गुण रखने है। माता की तरह वात्सलय एवं पिता की भांति अनुशासन में रखकर बच्चे को विषय ज्ञान देते हुए उसमें वांछित मूल्य भी विकसित करने है।
- समर्थ शिक्षा में शिक्षक विधार्थीयों से स्नेहिल एवं सहानभुति पूर्ण व्यवहार करे शिक्षक का आत्मीय व्यवहार बच्चो को अनके पुस्तको से अधिक शिक्षा देता है जिस प्रकार माता–पिता चहाते है। कि उनकी संतान योग्य बनकर उनसे भी अधिक यश–कीर्ती अर्जित करे, उसी प्रकार शिक्षक को यही आकांक्षा करनी चाहिए की विधार्थी शिक्षा ग्रहण करके अच्छे सुसंस्कृत नागरिक बन अपने बाद वाली पीढी में मूल्य विकसित करे तभी शिक्षा सार्थक होगी
- समर्थ एवं भावी शिक्षा प्रदान करने हेतु शिक्षक को विषय वस्तु का ज्ञान कक्षा में शिक्षा प्रदान करने का कौशल तथा बच्चो में नैतिक व चारित्रिक गुणों के संबंध की क्षमता होनी चाहिए।
- शिक्षक समर्थ शिक्षा बच्चो को प्रदान करे इसलिए शिक्षक को नयी–नयी जानकारियां प्रदान करने हेतु शिक्षक उत्तम शिक्षण संस्थाओ का भ्रमण करे। शिक्षण संस्थाओं के साथ विचार–विमर्श करे तथा वहा की अच्छी बाते एवं नीतियां अपने विधालय एवं छात्रो पर लागू करे।
- समर्थ शिक्षा के लिए शिक्षक को एक अच्छा सलाहकार, मित्र आदर्श एवं सहृदय व्यक्ति होना चाहिए।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 1, January- 2021
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

- शिक्षक अपने शिक्षा संस्थानों में उपर्युक्त बिन्दुओ को दृष्टिगत रखकर कार्य करे तो निश्चित ही विधार्थीयो में देश प्रेम, पारिस्परिक सदभाव आदि मूल्यों को विकसित कर सकते है। साथ ही सहयोंगी शिक्षको को भी अपने दायित्व के कुशल निर्वाह हेतु प्रेरणा दे सकते है। अथक संघर्ष के बाद प्राप्त स्वतंत्रता को अक्षुण्ण बनाए रखना अब प्रत्यक की जिम्मेदारी है। यह तभी संभव है जब सबमे प्रेम एवं एकता की भावना प्रबल हो इतिहास साक्षी है। कि एकता की कमी देश की सुरक्षा के लिए संकट बन जाती है। देश में एकता बनी रहे इस में देश की सबसे बडी सुरक्षा निहित है। आवश्यक है कि भावी पीढ़ी के हदय में राष्टीय एकता एवं देशभक्ति के संस्कार दृढ किये जाये शिक्षक यह भूमिका भली भॉति निभा सकता है। वही ऐसा व्यक्ति है जिसके पास समूची पीढ़ी होती है इसका लाभ उठाकर वह कक्षा में देशभक्ति एवं एकता जैसे मूल्य विकसित कर सकता है। स्वतंत्रता की मशाल तभी एक हाथ से दूसरे हाथ में सफलता पूर्वक पीढ़ी दर पीढ़ी सौंपी जा सकती है।

आजादी की लडाई के दौरान प्रतिकूल परिस्थितयों में शिक्षको ने शिक्षक धर्म का पालन किया तब आज के शिक्षक अपने दायित्व निभाने में पीछे क्यों हट रहे? वे भी यह कार्य सफलता पूर्वक कर सकते है आवश्यकता है तो बस दृढ संकल्प एवं निष्ठा की ठीक ही कहा गया है कि शिक्षक ज्ञान आचार एवं आलोक के केन्द्र है अपने कर्तव्य का निर्वहन कर वे राष्ट्रीय पुननिर्माण में अपना रचनात्मक योगदान करने के साथ अनुकरणीय आदर्श प्रस्तुत कर सकते है। जैसा की

शिक्षक है युग के निर्माता।

बच्चे के राष्ट्र के भाग्य विधाता।।

समर्थ शिक्षा और अभिभावक

माता गुरूणां गुरूः। और माता को गोद में हो राष्ट्र का स्वर्णिम भविष्य अठखेलिया लेता है पुष्पित एवं पल्लवित होता है। बालक के लिए माँ सौ शिक्षको के बराबर होती है। घर बालक के लिए प्रथम विधालय है। पैदा हाते ही उसकी सुरक्षा तथा उसके जीवत रखने को जिम्मेदारी माता–पिता ही निभाते है वही से बालक मानवांचित गुणो को अपनाना सीखता है। और उसका स्थायी विकास घर आंगन में ही होता है।

रेमन्ट के अनुसार– ''घर वह स्थान है जहां से महान गुण विकसित होते है। जिनकी सामान्य विशेष सहानुभुति है घर में आगाध प्रेम की भावना का विकास होता है यहॉ पर वह उदारता–अनुदारता, स्वार्थ–निःस्वार्थ न्याय–अन्याय, सत्य–असत्य, परिश्रम–आलस्य में अंतर सीखता है। इनमें से कुछ की आदत घर में पड जाती है।''

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 1, January- 2021
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

पंडित विधानिवास मिश्र जो प्राचीन पारम्परिक शिक्षा तंत्र में दीक्षित हुए थे लिखतें है कि शिक्षा की पहली संस्था घर ही थी जंहा बालको को वाचिक शिक्षा दी जाती थी। जिन्हे विविध प्रकार के गीत, भजन, श्लोक प्रेरक कथावार्तो आदि कंठस्थ करवा दिये जाते थे जो उन्हे आजीवन संस्कारित बनायं रहते थे। निष्क्रिमण संसकार के बाद जब बालक घर से बाहर निकलने लगते थे तो खेतो, मैदानो, बाग बगीचो में सभी वृद्धजन सभी बालको को अपने बालको के समान ही संस्कारित करते रहते थे जो जिस विषय का जानकार होता था वह अपने ज्ञान कौशल हुनर को शिक्षा अपने परिवेश के बालको को निःशुल्क देने को तत्पर रहता था जिससे सभी बालक अपनी परिवेश के सभी पेड–पौधो जीव जन्तु से परिचित हो जाते थे।

- माता–पिता बाल शिक्षा की पहली कक्षा है। चार या पॉच वर्ष के पश्चात बालक विधालय में जाता है। उस समय उसके मस्तिष्क में अनेक ग्रंथियों का निर्माण हो चुका होता है।
- बच्चे के सामाजीकरण की प्रक्रिया में अभिभावकों की महन्वपुर्ण भूमिका है। समर्थ शिक्षा के लिए अभिभावको के सामाजिक कार्य इस प्रकार है।
- अभिभावकों अपने बच्चो में सामाजिक, आध्यात्मिक और नैतिक गुणो का विकास करे जिससे बच्चो में चरित्र निर्माण के सभी गुण विभूषित हो जायें।
- मानसिक एवं भावत्मक विकास अभिभावकों में एक पारिवारिक भावना होने के कारण आपस में एकता का अनुभव करते है। एकता के इस गुण का विकास परिवार में होता है।
- समायोजन की शिक्षा बालक परिवार से ही समायोजन करना सीखता है। अपने स्वभाव व्यवहार को उसी प्रकार ढाल लेता है। भावी जीवन हेतु अभिभावक अपनी भूमिका निभाये।
- आज्ञापालन अनुशासन के लिए परिवार के सभी सदस्य आज्ञा एवं निर्देशन के अनुसार कार्य करे तो बालक भी इस कार्य का अनुकरण करेगा।
- व्यवहार, स्थायी मल्यों का विकास, प्रेम का विकास, निर्देशन एवं सहयोग की शिक्षा और जीवीकोपार्जन का शिक्षा देकर अभिभावक अपने भूमिका निभा कर अपने बच्चो को समर्थ एवं जीवन की नीव के आधारशीला हो सकते है।
- अभिभावकों को हमेशा प्रसन्नमन और हँसमुखता से बच्चो के सामने उपस्थित होना चाहिए कभी भी बच्चो से क्रोध ऊँचे स्वर में नहीं बतियाना चाहिए बच्चे अपने माता–पिता अग्रजो से नाना प्रकार की अपनी जिज्ञासा को प्रकट करना चाहते है उनसे संवाद कायम करना चाहते

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 1, January- 2021
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

है अपनी पूछताछ तथा उत्सुकताये प्रत्युत्तर पाना चहाते है। हम उनमें सुखद स्थिति म बात करें और उनके सवालों का उत्तर उनकी भाषा और समझ के अनुसार दे।

- अभिभावक उन्हे अपने विचार स्वविवेक से निर्णय लेने दे। यह सारी प्रक्रिया दोतरफा होनी चाहिए बालको की अच्छी बातो के लिए प्रशंसा की जानी चाहिए किन्तु बुरी आदते के लिए दुत्कारना भी नहीं चाहिए उन्हे आभास करवाना चाहिए अमुख बात उनके हित की है और फला बात अहित की इस प्रकार निम्न बातो को ध्यान में रखकर अभिभावक समर्थ शिक्षा के लिए एक आधार प्रदान कर सकते है। परिवार को चाहिए कि शैशव अवस्था से ही बालक के विकास में समर्थ सहयोग दे।
- **इसे सन्दर्भ में प्लेटो का कथन सर्वथा** उपयुक्त है ''यदि आप चाहते है कि बालक सुन्दर वस्तुओं की प्रंशसा एवं निर्माण करें तो उसे सुन्दर वस्तुओं से घेर दो।

निष्कर्ष :

अभिभावक एवं शिक्षक समर्थ शिक्षा के लिए बालकों को सोचने दीजिए। हमें अपनी यह मानसिकता छोड़नी पडगी कि बच्चे नासमझ होते है। बच्चे अपनी बात और भावनाओं को सही ढंग से व्यक्त करने में समर्थ होते है। उनमें पूर्ण व्यक्तित्व निहित होता है जो हमसे कुछ अपेक्षाएं रखता है। उन्हे आदर, प्रतिष्ठा, स्नेह और हमारी भावांजली चाहिए हमारी एक मुस्काराहट इन कलियो को प्रस्फुटित कर देती है तो दूसरी और हमारी तनी हुई भृकुटिया उन्हें निष्क्रिय कर देती है। वे हममे अपना आदर्श खोजना चाहते है अगर उन्हें इसकी प्राप्ति नही होती तो वे भटक जाते है ओर फिर जन्म होता है एक ऐसी उच्छृंल पीढी का जो घर–परिवार समाज व देश के लिए सिर दर्द बन जाती है।

इसके लिए हम सभी को मिलजुल कर प्रयास करने होगें। हमें बालक को अपनी गतिविधियों का केन्द्र बनाना होगा। ऐसा तभी संभव है जब हम अपने में आकर्षण पैदा करें, बालक को हम दीप स्तम्भ सदृश्य लगे। दीप स्तम्भ बनने के लिए हम अपने आचरण को आदशात्मक बनाएं और आने वाले सकारात्मक पहलुओं को बालकों के सम्मुख प्रदर्शित करें। हम अपनी व्यवस्ताओं में उलझे रहते है पर इसकी झुंझलाहट बच्चों पर न उतारें।

संदर्भ ग्रंथ

- मिश्र विधानिवास, सपने कहां गए, प्रभात प्रकाशन 4/19 आसफ अली रोड नई दिल्ली।
- बधेका गिजुभाई ऐसे हो शिक्षक, संस्कृति साहित्य दिल्ली
- पाण्डे लता आलोक केन्द्र है शिक्षक एन.सी.ई.आर.सी नई दिल्ली

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 1, January- 2021
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

- शर्मा, आर.ए. मानव एवं मूल्य शिक्षा आर. लाल बुक डिपो मेरठ

पत्र–पत्रिका

- राजस्थान पत्रिका 14 नवम्बर 2014
- दैनिक भास्कर 11 नवम्बर 2014
- राजस्थान बोर्ड शिक्षण पत्रिका अजमेर